ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 144-149
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

सोशल मीडिया का स्नातक और परास्नातक विद्यार्थियों पर प्रभाव : एक अध्ययन

1. डॉ0 विनीत कुमार पाण्डेय
2. तनुजा राय

1. एसोसिएट प्रोफेसर, 2. शोध अध्येत्री– समाजशास्त्र विभाग, बी. आर. डी. बी. डी. पी .जी. कालेज, आश्रम बरहज–देवरिया (उ0प्र0), भारत

Received-06.05.2023, Revised-11.05.2023, Accepted-16.05.2023 E-mail: vineetpanday1@gmail.com

सारांशः ***सोशल मीडिया का प्रयोग आधुनिक समय में प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किया जा रहा है ।सोशल मीडिया जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। सोने के पहले हम सोशल मीडिया पर एक नजर दौड़ा लेते है और सुबह उठते ही सोशल मीडिया। सोशल मीडिया के साइट्स है – फेसबुक, टविटर, इंस्ट्राग्राम इत्यादि। भारत युवा देश है, आज का युवा कल का भविष्य बनेगा इस महत्व को देखते हुए प्रस्तुत शोध स्नातक व परास्नातक विद्यार्थियों पर किया गया है।***

Statists-com द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार– "भारत में फेसबुक यूजर्स की संख्या 270 मिलियन है, जबकि यूनाइटेड स्टेट्स अमेरिका जहां पर फेसबुक का जन्म हुआ, वह दूसरे नम्बर पर है"।[1] प्रस्तुत शोध का उद्देश्य सोशल मीडिया विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में किस प्रकार योगदान कर रहा है, सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव और नकारात्मक प्रभाव विद्यार्थी जीवन में क्या है, का अध्ययन करना शोध का मुख्य विषय है। प्रस्तुत शोध में अन्वेशणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। शोध सम्बन्धी तथ्य व आकड़ों को एकत्र करने के लिये प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत का प्रयोग किया गया है प्राथमिक स्रोत में साक्षात्कार अनुसूची एवं द्वितीयक स्रोत में पत्र–पत्रिकाओं और पुस्तकों का अध्ययन किया गया है। शोधार्थी द्वारा किए गए अध्ययन में प्राप्त होता है कि सोशल मीडिया छात्रों के लिए अनेक प्रकार से उपयोगी रहा है जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा। सोशल मीडिया का उपयोग शिक्षा में नोट्स प्राप्त करने मे और लेक्चर प्राप्त करने में सहायक रहा है।

कुंजीभूत शब्द– सोशल मीडिया, सकारात्मक प्रभाव, शिक्षा पर प्रभाव, आधुनिक समय, फेसबुक, टविटर, इंस्ट्राग्राम, साक्षात्कार।

विकीपीडिया में अध्ययन है कि "भारत में मीडिया का विकास तीन चरणों में हुआ। पहले दौर की नीव 19 वीं सदीं में उस समय पड़ी, जब औपनिवेशिक आधुनिकता के संसर्ग और औपनिवेशिक हुकूमत के खिलाफ असंतोष की अंतर विरोधी छाया में हमारे सार्वजनिक जीवन की रूपरेखा बन रही थी।

भारत का पहला अखबार बंगाल गजट भी 29 जनवरी 1780 को अंग्रेज जेम्स ऑगस्टस हिकी ने निकाला। 19 वी सदी के दूसरे दशक में कोलकाता के पास श्रीरामपुर के मिशनरियों ने और तीसरे दशक में राजा राममोहन राय ने साप्ताहिक मासिक और दैवमासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ किया। औपनिवेशिक सरकार ने 1930 में ब्रॉडकास्टिंग को अपने हाथ में ले लिया और 1936 में उसका नामकरण ऑल इंडिया रेडियो आकाशवाणी कर दिया गया। 1995 में भारत में इंटरनेट की शुरुआत हुई और 21वी सदी के पहले दशक के अंत तक बड़ी संख्या में लोगों के निजी और व्यवसायिक जीवन का एक अहम हिस्सा नेट के जरिए संशोधित होने लगा। इन तमाम पहलुओं ने मिलकर मीडिया 1985 से 1988 के बीच दूरदर्शन को आजादी का एक हल्का सा झोंका नसीब हुआ। इसका श्रेय भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी भास्कर घोष को जाता है, जो इस दौरान दूरदर्शन के महानिदेशक रहे। 1995 में भारत में इंटरनेट की शुरुआत हुई और 21वीं सदीं के पहले दशक के अंत तक बड़ी संख्या में लोगों के निजी और व्यवसायिक जीवन का एक अहम हिस्सा नेट के जरिए संशोधित होने लगा। इन तमाम पहलुओं ने मिलकर मीडिया का दायरा इतना बड़ा विविध बना दिया कि उसके आगोश में सार्वजनिक जीवन के अधिकतर आयाम आ गये। इसे 'मीडियास्फेयर' जैसी स्थिति का नाम दिया गया"।[2]

विनय कुशवाहा ने अपने अध्ययन में पाया कि– "सोशल मीडिया एक ऐसा मीडिया है, जो बाकी सारे मीडिया से अलग है। सोशल मीडिया इंटरनेट के माध्यम से एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है जिसे उपयोग करने वाला व्यक्ति सोशल मीडिया के किसी प्लेटफार्म (फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम) आदि का उपयोग कर पहुँच बना सकता है।

आज के दौर में सोशल मीडिया जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है, जिसके बहुत सारे फीचर है, जैसे की सूचनाएं प्रदान करना, मनोरंजन करना और शिक्षित करना मुख्य रूप से शामील है। सोशल मीडिया एक विशाल नेटवर्क है जो कि सारे संसार को जोड़े रखता है। यह संचार का एक बहुत अच्छा माध्यम है, जो द्रुतगति से सूचनाओं के आदान प्रदान करने, जिसमें हर क्षेत्र की खबरें होती है, को समाहित किए होता है।

सोशल मीडिया सकारात्मक भूमिका अदा करता है, जिससे किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है। सोशल मीडिया के जरिये ऐसे कई विकासात्मक कार्य हुए हैं जिनसे कि लोकतंत्र को समृद्ध बनाने का काम हुआ है जिससे किसी भी देश की एकता, अखंडता, पंथनिरपेक्षता, समाजवादी गुणों में अभिवृद्धि हुई है।

हम ऐसे कई उदाहरण देखते हैं, जो कि उपरोक्त बातों को पुष्ट करते हैं जिनमें 'इंडियन अर्गेस्ट कारपोरेशन' को देख सकते हैं जो कि भ्रष्टाचार के खिलाफ महाअभियान था, जिसे सोशल मीडिया पर भी लड़ा गया। अन्ना हजारे के समर्थन में लोगों का जनसमूह उनके आंदोलन से जुड़े। सोशल मीडिया के जरिए निर्भया को उसके पक्ष में न्याय दिलाने के लिए एक बड़ी संख्या में युवाओं का समूह सड़क पर आ गया। सरकार पर दबाव बढ़ता नजर आया सरकार कानून बनाने पर मजबूर हो गई। लोकप्रियता के प्रसार में सोशल मीडिया एक बेहतरीन प्लेटफार्म है, जहां व्यक्ति स्वयं को अथवा अपने किसी उत्पाद को ज्यादा लोकप्रिय बना सकता है। आज फिल्मों के ट्रेलर, टीवी प्रोग्राम का प्रसारण भी सोशल मीडिया के माध्यम से किया जा रहा है। वीडियो तथा ऑडियो चैट भी सोशल मीडिया

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

के माध्यम से सुगम हो पाई है जिनमे फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम कुछ प्रमुख प्लेटफार्म है।

सोशल मीडिया जहाँ सकारात्मक भूमिका अदा करता है। वहीं कुछ लोग इसका गलत प्रयोग भी करते हैं। सोशल मीडिया का गलत तरीकें से उपयोग कर ऐसे लोग दुर्भावनाए फैला कर लोगों को बांटने की कोशिश करते हैं सोशल मीडिया के माध्यम से भ्रामक और नकारात्मक जानकारी साझा की जाती है जिससे कि जनमानस पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कई बार तो बात इतनी बढ़ जाती है कि सरकार सोशल मीडिया के गलत इस्तेमाल करने पर सख्त हो जाती है और हमने देखा है कि सरकार को जम्मू– कश्मीर जैसे राज्य में सोशल मीडिया पर प्रतिबंध तक लगाना पड़ा।"[3]

साहित्य सर्वेक्षण– शोध आलेख– सोशल मीडिया और युवा विकास, शोधार्थी–डॉ. मुकुल श्रीवास्तव और सुरेंद्र कुमार ने अध्ययन कर पाया कि "सोशल नेटवर्किंग साइट युवाओं के विकास से संबंधित स्वास्थ्य, शिक्षा, कैरियर, योजना जानकारी के लिए बेहतर सुविधा प्रदान करता है। इस प्रकार से सोशल मीडिया के द्वारा युवा ज्यादा जागरूक हो रहे हैं"।[4] शोध आलेख– सामाजिक विकास में सोशल मीडिया की भूमिका, शोधार्थी– राहुल कुशवाहा, डॉ. सुषमा गांधी ने अध्ययन कर पाया कि "सामाजिक माध्यमों के उपयोग से छात्रो को अध्ययन, शोध और रोजगार प्राप्त करने में बहुत मदत मिलती है। सरकारी नीतियों, कल्याण सम्बन्धी योजनाओं के बारे में सोशल माध्यमों के सहयोग से समय रहते पर्याप्त जानकारी उपलब्ध होने के कारण समाज के सर्वांगीण विकास की राह आसान हो गयी है"।[5]

विशाल वर्मा ने अपने अध्ययन में पाया कि "भारत में सोशल मीडिया का सबसे लोकप्रिय प्लेटफार्म फेसबुक भारतीय राष्ट्रवाद का नया 'गुरुकुल' बनकर उभरा है। राष्ट्रवाद के इस 'गुरुकुल' में सूचना तकनीकी व इंटरनेट का समिमश्रण है। जिसने इसे परंपरागत 'गुरुकुल' पद्धति से अलग करते हुए, समकालीन जीवन शैली के अनुरूप बनाने में मदद की है।

सोशल मीडिया के इन 'गुरुकुलों' पर न सिर्फ राष्ट्रवाद की चर्चा हो रही है। बल्कि यह बड़े पैमाने पर लोगों को राष्ट्रवाद के विषय में शिक्षित करने का दावा भी कर रहे हैं"।[6]

अंकुश राज ने अपने अध्ययन में पाया कि– "सोशल मीडिया का शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव देखने को मिलता है। सकारात्मक प्रभाव में बहुत बच्चे अपनी भावनाओं को कक्षा में व्यक्त करने में रुचि नहीं लेते और सोशल मीडिया पर आसानी से व्यक्त करते हैं। सोशल मीडिया द्वारा शिक्षण में शिक्षक सोशल मीडिया पर कक्षा गतिविधियों, स्कूल की घटना, गृह कार्य, असाइनमेंट प्रेषित करता है जो विद्यार्थी के लिए उपयोगी होता है"।[7]

अनुसंधान पद्धति– इस अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा अन्वेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। स्नातक और परास्नातक छात्रो का चयन रेन्डमली विश्वविद्यालय और कालेज से किया गया है। शोध सम्बन्धी तथ्य व आकड़ों को एकत्र करने के लिये प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत का प्रयोग किया गया है । प्राथमिक स्रोत में साक्षात्कार अनुसूची एवं द्वितीयक स्रोत में पत्र–पत्रिकाओं और पुस्तकों का अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य–

(1) सोशल मीडिया विद्यार्थियों के शिक्षा में किस प्रकार लाभकारी है इसका अध्ययन करना है।
(2) सोशल मीडिया का विद्यार्थी जीवन में सकरात्मक प्रभाव क्या है, का अध्ययन प्राप्त करना है।
(3) सोशल मीडिया का विद्यार्थी जीवन में नकरात्मक प्रभाव क्या है का अध्ययन प्राप्त करना है।

शोध परिणाम– सोशल मीडिया का स्नातक और परास्नातक विद्यार्थियों पर प्रभावः एक अध्ययन जो दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय और इस विश्वविद्यालय से सम्बन्धित कालेज बाबा राघवदास भगवान दास स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय (बी. आर. डी. बी.डी.पी. जी. कालेज) आश्रम बरहज देवरिया मे अध्ययनरत 150 विद्यार्थियों पर किया गया अध्ययन है। अध्ययन में 30 उत्तरदाता दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय से सम्बन्धित है, 120 उत्तरदाता इस विश्वविद्यालय से सम्बन्धित कालेज बाबा राघवदास भगवान दास स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय (बी. आर. डी. बी.डी.पी. जी. कालेज) आश्रम बरहज देवरिया से सम्बन्धित है।

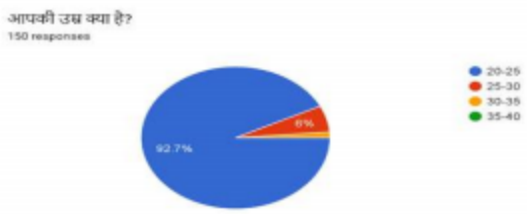

जिसमे 92.7% (138) उत्तरदाताओं की आयु 20–25 वर्ष की है।

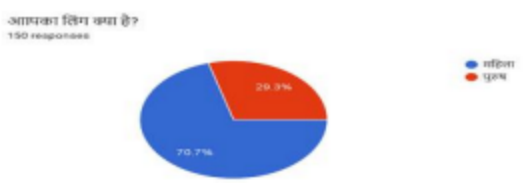

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

150 उत्तरदाताओ पर किए गए अध्ययन में 70.7%(106) महिला उत्तरदाता और 29.7%(44) पुरुष उत्तरदाता है।

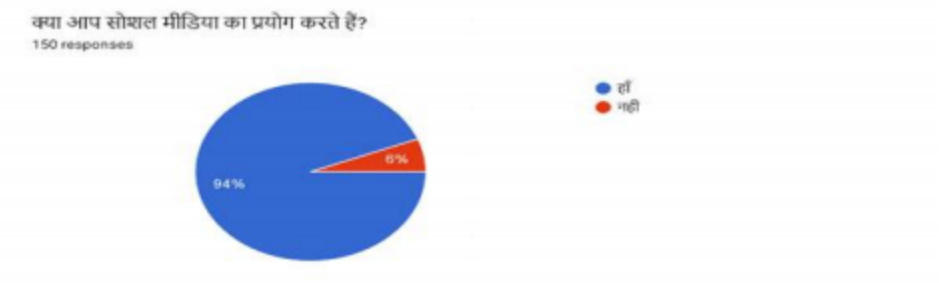

150 विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में 94%(141) उत्तर दाता सोशल मीडिया के प्लेटफार्म पर सक्रिय है।

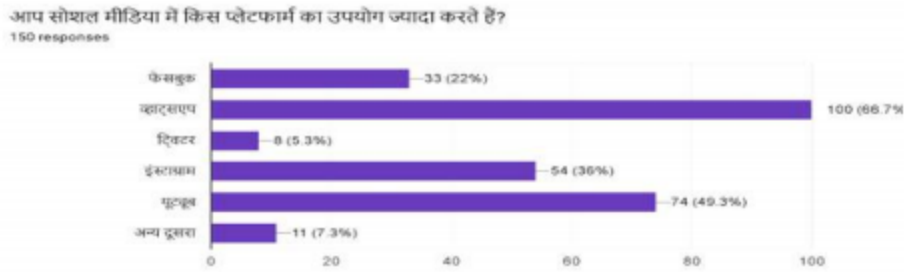

अध्ययन में प्राप्त होता है कि सोशल मीडिया के प्लेटफार्म में व्हाट्सएप का प्रयोग सबसे ज्यादा किया जा रहा है। व्हाट्सएप का प्रयोग करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 66.7%(100), यूट्यूब का प्रयोग करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 49.3%(74) और इंस्टाग्राम का प्रयोग करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 36%(54), फेसबुक का प्रयोग करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 22%(34), ट्विटर का प्रयोग करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या5.3% (8) है।

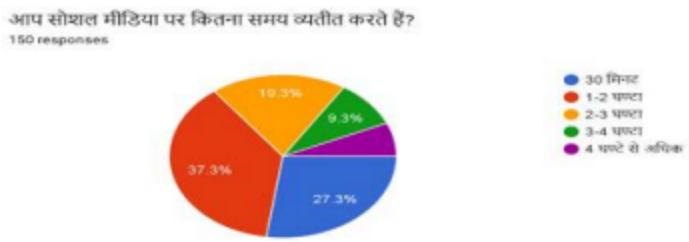

अध्ययन में प्राप्त होता है कि सोशल मीडिया का प्रयोग सबसे ज्यादा समय तक 1 से 2 घंटा किया जा रहा है, जिसका प्रयोग करने वाले उत्तरदाता की संख्या 37.3% (56) है।

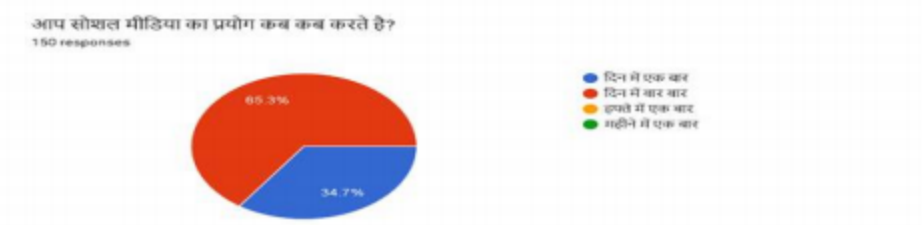

अध्ययन में प्राप्त होता है कि सोशल मीडिया का प्रयोग दिन में बार–बार करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 65.3%(98) और दिन में एक बार प्रयोग करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 34.7%(52) है ।

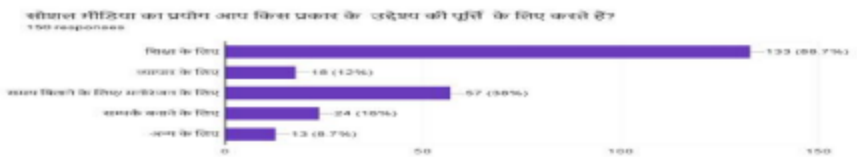

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

अध्ययन में प्राप्त होता है कि उत्तरदाताओं द्वारा अधिकतर सोशल मीडिया का प्रयोग शिक्षा के लिए किया जा रहा है। शिक्षा के लिए प्रयोग करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 88.7% (133) है । इसके पश्चात अधिकतर उत्तरदाता सोशल मीडिया का प्रयोग समय बिताने और मनोरंजन के लिए करते हैं, समय बिताने और मनोरंजन के लिए सोशल मीडिया का प्रयोग करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 38%(57) है ।

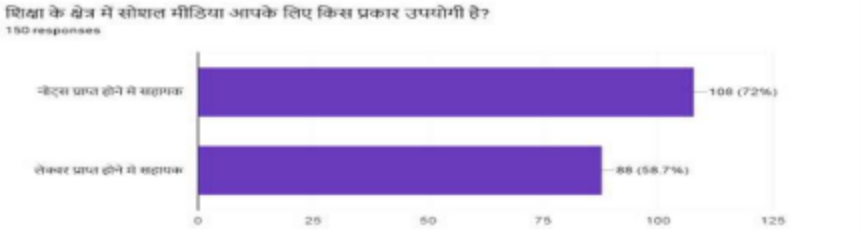

अध्ययन में प्राप्त होता है कि सोशल मीडिया नोट्स प्राप्त होने और लेक्चर प्राप्त होने, दोनों में सहायक है। अधिकतर उत्तरदाताओं का मानना है कि सोशल मीडिया नोट्स प्राप्त होने में सहायक है।

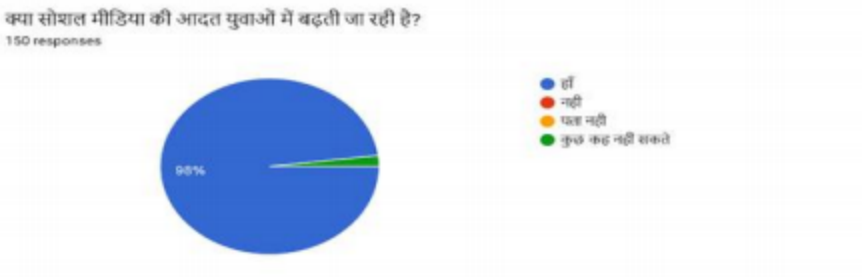

अध्ययन में प्राप्त होता है कि सोशल मीडिया की आदत युवाओं में बढ़ती जा रही है, 98%(147) उत्तर दाताओं का मानना है कि सोशल मीडिया की आदत युवाओं में बढ़ती जा रही है ।

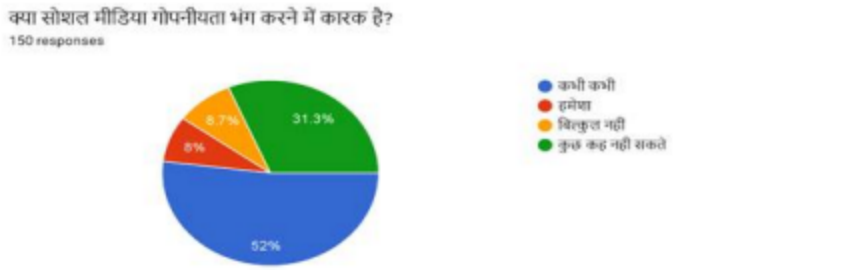

52%(78) उत्तर दाताओं का मानना है कि कभी–कभी सोशल मीडिया गोपनीयता भंग करने का कारक बन जाता है, 31.3% (47) उत्तर दाताओं का मानना है कि वो इस बारे में कुछ कह नहीं सकते, 8%(12) का मानना है कि हमेशा सोशल मीडिया गोपनीयता भंग करने का कारक बनता है, 8.7%(13) उत्तरदाताओं का मानना है कि सोशल मीडिया गोपनीयता भंग करने का कारक नहीं है ।

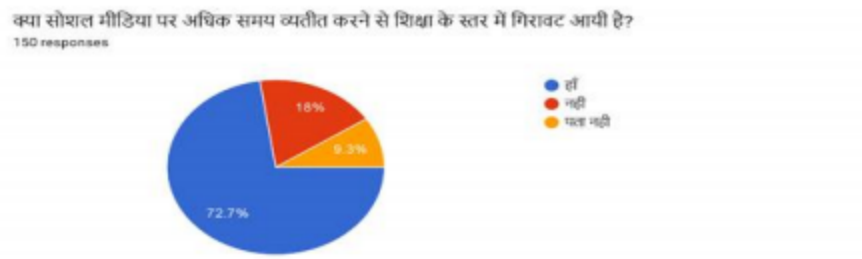

अध्ययन में प्राप्त होता है कि 72.7% (109) उत्तर दाताओं का मानना है कि सोशल मीडिया का अधिक समय तक प्रयोग करने से शिक्षा के स्तर में गिरावट आयी है, वही 18% (27) उत्तर दाताओं का मानना है कि सोशल मीडिया का अधिक समय तक प्रयोग करने से शिक्षा के स्तर में गिरावट नहीं आयी है ।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

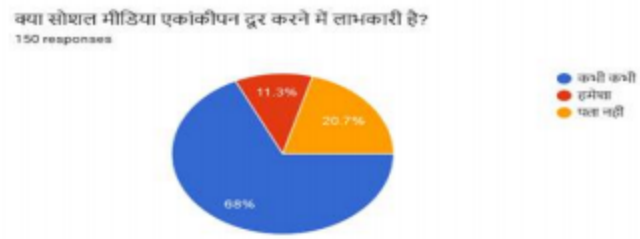

अध्ययन में 68% (102) उत्तरदाताओं से प्राप्त होता है कि सोशल मीडिया एकांकीपन दूर करने में कभी–कभी उनके लिए सहायक होता है वही 20.7%(31) उत्तरदाताओं का मानना है कि सोशल मीडिया हमेशा एकांकीपन दूर करने में सहायक होता है।

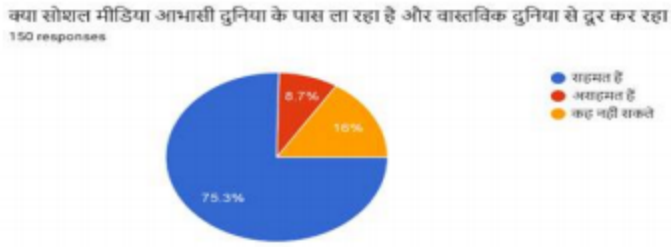

113 उत्तरदाताओं का मानना है कि सोशल मीडिया के प्रयोग से वह वास्तविक दुनिया से दूर जा रहे हैं और आभासी दुनिया के पास आ रहे हैं, वही 24 उत्तरदाता इससे असहमत हैं।

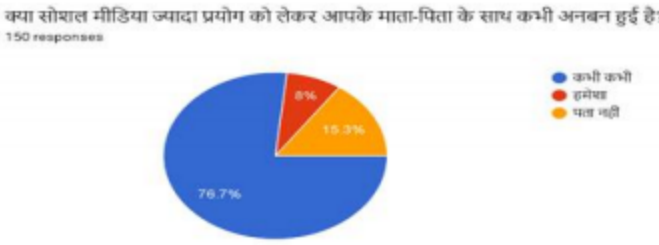

76.7%(115) उत्तरदाताओं का मानना है कि सोशल मीडिया का ज्यादा प्रयोग को लेकर उनके माता–पिता के साथ कभी– कभी अनबन हुयी है, वही 8%(12) उत्तरदाता का मानना है कि सोशल मीडिया के ज्यादा प्रयोग को लेकर माता–पिता के साथ हमेशा अनबन होती हैं।

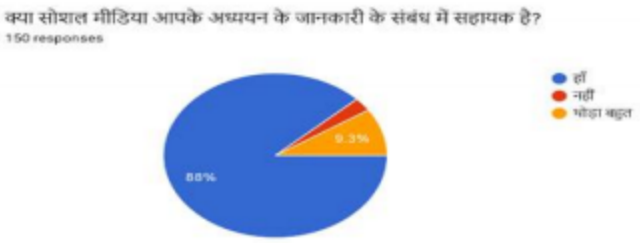

88%(132) उत्तरदाताओं का मानना है कि सोशल मीडिया उनके अध्ययन की जानकारी के सम्बन्ध में सहायक है।

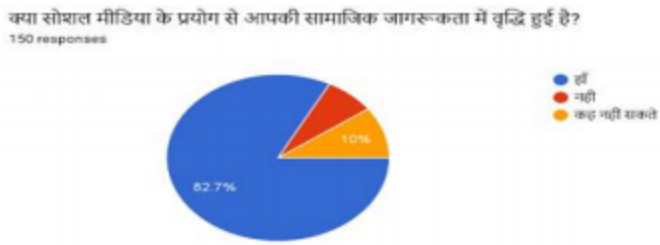

अध्ययन में 82.7%(124) उत्तरदाताओं का कहना है कि सोशल मीडिया के प्रयोग से सामाजिक जागरूकता में वृद्धि हुई है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

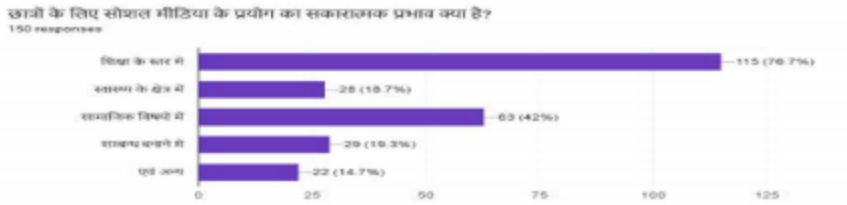

अध्ययन में प्राप्त होता है कि सोशल मीडिया के प्रयोग का सकरात्मक प्रभाव निम्न प्रकार से है –76.7%(115) उत्तरदाताओं का मानना है कि शिक्षा के स्तर मे सकारात्मक प्रभाव है, उसके बाद 42% (63) उत्तरदाताओं का मानना है कि सामाजिक विषय में,19. 3% (29) उत्तर दाताओं का मानना है कि संबंध बनाने में18.7% (28) उत्तरदाताओं का मानना है कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में सोशल मीडिया के प्रयोग का सकारात्मक प्रभाव है।

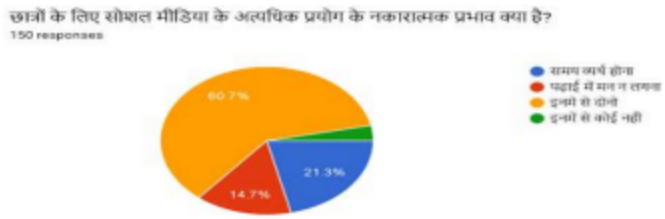

अध्ययन में 60.7% (91) उत्तरदाताओं का कहना है कि सोशल मीडिया के अत्यधिक प्रयोग से समय व्यर्थ होना और पढ़ाई में मन न लगना सोशल मीडिया का नकरात्मक प्रभाव है ।

निष्कर्ष– सोशल मीडिया दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। शिक्षा जगत से लेकर, व्यापार, स्वास्थ्य से सम्बन्धित आवश्यक जानकारी सोशल मीडिया पर उपलब्ध है। छात्रों के लिए सोशल मीडिया शिक्षा से सम्बन्धित जानकारी के लिये सहयोगी है। जहां सोशल मीडिया के सकरात्मक प्रभाव प्राप्त होते है वही कुछ नकरात्मक प्रभाव भी है, जैसे– सोशल मीडिया का ज्यादा प्रयोग करने से समय बर्बाद होना और पढ़ाई मे मन न लगना भी है। सोशल मीडिया का प्रयोग अपनी आवश्यकता अनुसार ही करनी चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://www-statista-com/statistics/26816/top&15-countries&based&on&number&of&facebook&users.
2. hi-wikipedia-org/wiki/ भारतीय–मीडिया।
3. https://hindi-webdunia-com/hindi&essay/Social-media&essay&117061900031-html-
4. श्रीवास्तव, मुकुल, कुमार सुरेन्द्र, 'सोशल मीडिया और युवा विकास' जनवरी– मार्च 2017, मीडिया मीमांसा.
5. कुशवाहा, राहुल, डॉ. गाधी सुषमा, 'सामाजिक विकास में सोशल मीडिया की भूमिका : एक अध्ययन' जनवरी 2018, International Journal of Hindi Research, Page No. 20-23, Volume 4, Issue 1.
6. वर्मा, विशाल (2019), 'राधा कमल मुकर्जी चिन्तन परम्परा', ISNN : 0974–0074 पृष्ठ–99.
7. चौहान, अंशु, (2018), 'सोशल मीडिया का युवा पीढ़ी पर पड़ने वाले सांस्कृतिक परिवर्तन का अध्ययन', जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म०प्र०), पृष्ठ–282.

*****